

दुर्गापाठ

श्रीः

दुर्गापाठ भाषा

श्री अनन्यकविकृत

दुर्गापाठके तेरह अध्यायोंका आशय अनेक
भाषा छंदोंमें संक्षेपसे वर्णित।

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बंबई - ४०० ००४

संस्करण - सन् २००१, सम्वत् २०५८

मूल्य : १५.०० रुपये मात्र ।

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

श्रीः

दुर्गापाठ भाषा

अनन्य कविकृत.

मंगलात्मक-दोहा

श्रीगणपतिपद नाय शिर, औ भवानि पद ध्याय ।
दुर्गापाठहि रचत हौं, बिघ्न सकल मिटि जाँय ।।

रामदूत-दोहा

सुन्दर पद गुरुनाथके, सुन्दर गुरु उपदेश ।
सुन्दर चरित भवानिके, सुन्दर सुरथ नरेश ।।

त्रिकल-दोहा

सुरथ धर्म राजा भयो, केवल धर्म निधान ।
सकल नगर कुल जन प्रजा, पालहिं पुत्र समान ।।

बल-दोहा

नृपति भार मंत्रिन दियो, आप करत सुख मोद ।
कै नित नेम शिकार को, कै रस बाम विनोद ।।
तब शत्रुन व्यवहार लखि, जान्यो नृपति अचेत ।
देश मारि घेरो नगर, सब परिवार समेत ।।
राजा मंत्रिन बल रहे, मंत्रिन किय अविश्वास ।
जाय मिले सब शत्रु लखि, नृपति भाग बनवास ।।
मन महँ राउ बिसूरही, करि करि सबकी सुद्धि ।

अपने दुख तनखबरि नहिं, परी मोहवश बुद्धि ।।
तौलों देखो वृद्ध यक, रोवत झंखत गात ।
कोहै तू रोवत कहा, नृप पूछी यह बात ।।
सुनि वह वृद्ध जबाब दै, मेरो नाम समाधि ।
वैश्य जाति बहु धन कुटुँब, भयो बुढ़ापैं ब्याधि ।।
वृद्ध जानि त्रिय सुतन मिलि, दीन्हों मोह निकारि ।
मैं उनको रोवत फिरत, सकत न मोह विसारि ।।

राजोवाच

जिन तोको बहु दुख दियो, दियो बुढ़ापै काढ़ि ।
तिनको तू रोवत कहा, मोह विषय मन बाढ़ि ।।

वैश्य उवाच

उन मोको बहु दुख दियो, मेरो मन उनमाहिं ।
मोह न छूटैं राज सुनु, मन मेरो वश नाहिं ।।
सुनि राजा तेहि संगलै, गत मेधा ऋषि पास ।
ऋषि पूछी तुम कौन हौ, चकृत फिरहु उदास ।।

राजोवाच

हम राजा यह वैश्य है, भृत्यनि दियो निकारि ।
हम उनको रोवत फिरत, सकत न मोह सँभारि ।।
मोह फांस यह है कहा, को व्याप्यो मनमाहिं ।
यह कारण कहियो गुरु, समुझि परत कछु नाहिं ।

ऋषिरुवाच-तोमर छंद

सुनु राजराज प्रवीण । मन शक्तिके आधीन ।।
श्रीआदिशक्ति भवानि । द्वैशक्ति तिनते जानि ।।
विद्या अविद्या नाम । तिनके दुपद परिणाम ।।
विद्या सो ज्ञान स्वरूप । मोहक अविद्या भूप ।।
जग है अविद्या अंध । परि मोहपास निधंध ।।
धरि जन्म मिथ्या यात । नित जात खात कमात ।।
जे भजत आदि भवानि । कारण करन पहिचानि ।।
तिन करत विद्या भुक्ति । मुनि सिद्ध जीवन मुक्ति ।।

दोहा

कारण बंधन मुक्तिको, आदि भवानी जानि ।
सकल सिद्धि आनँद करनि, सब लायक जगरानि ।।

राजोवाच-तोटक छंद

सुनिराज करी विनती तबहीं ।
मन गाथसुनी समझी अबहीं ।।
कहिये सुकृपा करि देवि सकै ।
कितते उपजी कितहैं अबकै ।।

ऋषिरुवाच-मूल

नित्यानन्द स्वरूप सर्व मयजानिये ।
उपजति बिनशति नाहिं अनादि बखानिये ।।
देवन संकट परत प्रकट तब होति है ।

वह अविगत सुनु राज सनातन ज्योति है ।।
प्रलय समय जब सिंधुमें, सोवत थे हरि आप ।
व्यापक तिनकी देहमें, निद्रारूप प्रताप ।।
सोवत हरिकी नाभिते, भयो ब्रह्म अवतार ।
मधु कैटभ पुनि श्रवणते, भये असुर बिकरार ।।
तब संकेतहि देखि विधि, हरि सोवत जल माहिं ।
क्यों यह जागैं जगतपति, और सहायक नाहिं ।।
यह बिचारिमन ध्यान धरि, ज्ञान निरंतर लेषि ।
अस्तुति करि जगमातुकी, प्रेरक शक्ति विशेषि ।।
तबै कृपा करि ईश्वरी, शक्ति लई वह खैंचि ।
जावश हरि सोवतहते, मन बच बुधि बलसैंचि ।।
तब हरिसों उन खलनसों, युद्ध भयो बरजोर ।
पंच सहस्त्रवरषै भई, घटै नहीं बलघोर ।।
तब असुरन कहँ ईश्वरी, प्रेरक किय तिहि ठौर ।
तिनहींके मुख वाक् छल, कही और की और ।।
अब हरि तुम मारो हमैं, धरि जंघन पर शीश ।
सुनत तुरत धरि चक्रसों, शिर काटो जगदीश ।।
यहि विधि विधि विष्णवादि कहँ, संकट देवि सहाय ।
अब सुनु नृप इन्द्रादि हित, जो प्रकटीं जगमाय ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः ।। १ ।।

दंडक-छंद

बाढ्यो महिषासुर प्रचंड बलबंड महा,
जाकी धाक सुनिकै विधाता धकपक्यो है ।
ढाहत गढ़ कोटिन गिरावत गिरि श्रृंगन सों,
खूँदत खुरन धरा शेष सकपक्यो है ।।
सातो द्वीप दपट समुद्र दहि चालकर,
सूर शशि तारनकी पल झकपक्यो है ।
अक्षर अनन्य जाहि आवत सुनत कान,
देवन समेत भागि इन्द्र अकपक्यो है ।।

सोरठा

भगि इन्द्र ततकाल, गये त्रिदेवनके निकट ।
कह्यो तहां सब हाल, क्षोभ भयो उनके हिये ।।

दोहा

तब सब देवन अंगते, कढ़ी शक्ति हहराय ।
तेज पुंज प्रज्वलित अति, रही अग्नि क्षितिछाय ।।

मोतीदाम छंद

तबै सब देवन अस्तुतिकीन । दयाकरि देवि हमै लखिदीन।।
सह्योनपरै तुवतेज अनन्त । कृपाकरिदीजियमूरतिवन्त ।।
इति सुनिकै तजितेज प्रजोर । भईमृदुमूरति बैस किशोर।।
धरे भुज आठत्रिलोचनचारु । करैं अरचासुर प्रेम अपारु ।।

मुरारिदियोकरचक्र बिचित्र । विरंचिकमंडल दीनपवित्र ।।
त्रिशूल दियोशिवशंकर आप । सुरेशदियो निजवज्रप्रताप।।
सुशक्ति दईकरमें जलपाल । सुचर्मदियोनिजकाल कराल।।
दई यमपाशबिनाशन शत्र । दियोबडवाधनु बानसो अत्र।।
दियोमणि भूषणसिंधुसुहार । दियो कमलारतिसर्वश्रृँगार।।
हिमाचलबाहन सिंहसुदीन । भई तेहि पै असवार प्रवीन ।।
झुक्यो उतते महिषासुर आय । खदेरतु देवनसंगरजाय ।।
तबैसब देवन आप पछेलि झुकी अरिगंजनि मातु अकेलि।।
कितेदल दानव दीन उडाय । किते दलवज्रनिगंजिढहाय ।।
कितेदलशूलनिहूलनिमारि|कितेदलचक्रनिखंडि सँहारि ।।
कितेदलखड्गनिपुंजनिखंड्ग|कितेदलशक्ति नमारिबिहंडि।।
हन्यो सिगरेदलसंगरखेल । रह्योमहिषासुर आप अकेल ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्याय: ।। २ ।।

दंडक छंद

कबहूं महिष ह्वैकै अंगनि चलावै गिरी,
कबहूं वृषभ ह्वैकै डफने करतु है ।
कबहूं गयंद ह्वैकै घोर गलगाजतु है,
कबहूं कै सिंह ह्वैकै सिंहसों लरतु है ।
कबहूं बिलाव ह्वैकै लुकत भूकत फिरै,
अक्षर अनन्य भेष केतक धरतु है ।

जोई पाश करै देवि सोई पलटत रूप,
क्योंहू महिषासुर न वशमें परतु है ।।

दोहा

तब अम्बा अति कोप करि, उतरि सिंहते आप ।
दियो पाँव अरि घींच पर, क्यों सहि सकै प्रताप ।।
घींच दाबिकै चरणतर, छाती हन्यो त्रिशूल ।
महिषासुर मार्यो प्रबल, सब असुरनको मूल ।।

सवैया

मारि महा महिषासुरको गरजी रणमें रणगंजन रानी ।
विष्णु बिरंचि महेश सुरेश करी बहु अस्तुतिवेद प्रमानी
दै सबको बरदान अनेकभई तब आपुन अंतरध्यानी ।
फूलि सबै सुरराजकरैं सुभजैं भयभंजनि नामभवानी ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ।। ३ ।।

शक्रादि स्तुति-दोहा

यहि विधि सों श्रीभगवती, हन्यो महिष धरि देह ।
अब पुनि शुंभ निशुंभ प्रति, कथा नृपति सुनि लेह

पद्धरी छंद

बड्ढे जग शुंभनिशुंभराइ । दितितनय अदितसुतशत्रु भाइ
नृप शुंभ छत्रपति बंधु जेठ । तिनते निशुंभ लघुबंधु हेठ

दुव बंधुपरमसमरथ सुशील । सुम्मेरसमान प्रलम्बडील ।।
अति मायावी बल सिद्धक्रुद्ध । दश दश हजार भुजपरतयुद्ध
तिन युद्धजुरनसमरत्थकौन । थरथरकम्पतजल अग्निपौन
धर धचकै तौ पातालजाहि । श्वासनिदेहै पर्वत उड़ाहि ।।
असभोप्रचंड युवराज गर्व । सुर असुरचरणसेवतसुसर्व ।।
तिनअग्रभाग रत्तारबिंद । गजकोटिप्रबल दलतारमिंद ।।
दलपतिहैधूम्रलोचनकराल । जिहिदेखिकँपैकलिकालकाल
पुनि चंड मुंड योधा प्रचंड । बिकरालरूपदलबल अखंड
दलअसुर जूहसम्मूह छाइ । राजतसमस्त जनुकालराइ ।।
इमिशुंभनिशुंभनरेशबड्ढ । सनमुक्खरहैंनहिंशत्रुठड्ढ ।।
बहुबारविष्णुहारेतेयुद्ध । यशतिलकलीननृपशुद्धशुद्ध ।।
बिधि कौसोहैलीन्होंछड़ाय । हिगपालंबददिकीन्होंरिसाय
भंडार लूटिलिन्हों कुबेर । अस्थान छीन लीन्हों सुमेरु ।।
लियश्यामकरणसबबाजिजित्तसागरहिकाढिलियरत्नचित्त
अपनेकरसूरजचन्द्रथाप । थपेलोक लोकदानवप्रताप ।।
यमकालमृत्युकुल बंदिकीन । थपेआपुशेषशिरभारुदीन ।।
कुलसहितइन्द्र दीन्होंनिकारि । लियऐरावतवारनसुरारि ।।
कियइन्द्रलोकरजधानिराज । सुखनिष्कंटकदानवसमाज ।।

महानराच छंद

समाज दैत्यराज नित्य देवलोक राजही,
समस्त देवराज सेवराज सेव तक्कवै ।।

त्रिलोक सप्तद्वीप खंड नौ अखंड मंडकै,
ब्रह्मांड एक विश्व को सहाय आन नक्कवै ।।
भनै अनन्य अन्य राव चावदेखिये नहीं,
विलोकि छत्र छत्रपत्ति नाथशुंभ धक्कवै ।।
विरंचि विष्णु जित्यतित्य बोधिकै प्रसादगो,
प्रमाद सर्व शुंभही निशुंभ शुंभ चक्कवै ।।

चंचला छंद

चक्कवैं निशुंभ शुंभ सभ्रवी महाप्रसाद,
भाजियो समस्त देवलोक लोक भो विषाद ।।
शोककै विरंचि विष्णु शोचिकै कितो बिचार,
सर्व ये अधार आदि शक्तिसों करो पुकार ।।

कुंडलिया

यहि विधि बिधि विष्णवादि सुर, करिमत तुरत सिधारि,
हेमाचलगिरि पर गये, निज अस्थान निहारि ।।
निज अस्थान निहारि मातु आपुन जहँ राजहिं,
महा पारबति नाम हेम पर्ब्बत छबि छाजहिं ।।
लहि ठिकान सुर सकल बिकल बर्णहुंगति केहि विधि,
करि प्रणाम जुरि पाणि विनय करुणा कृत इहि विधि ।।

देव-उवाच मोतीदाम दण्डक छंद

जातिरूप ज्योतिरूप सत्तरूप सिद्धिरूप,
गुणरूप ज्ञानरूप शोभारूप सोही है ।।

इच्छारूप क्रियारूप दयारूप मायारूप,
त्रियारूप बलरूप वाणीरूप मोही है ।।
आशारूप प्यासारूप निद्रारूप क्षुधारूप,
चित्तरूप बुद्धिरूप चेतनता जोही है ।।
नानारूप व्यापक प्रकाश सब शक्तिरूप,
जक्तमें अधार जक्त माता एक तोही है ।।

छप्पय

तुहीं जक्त आधार शक्ति माता भय भंजनि ।
निराधार सुर सकल बिकल तुव शरण निरंजनि ।।
दीन्हो अरिन निकारि हारि कोइ बात न बुज्झहिं ।
तुव आशा लिय आय बिपिन कोइ ठौर न सुज्झहि ।।
तुव अब तब आशा तुही आदि मध्य अंतही भननि ।
आवत लक्ष निरक्षही सुरक्ष रक्ष समरथ जननि ।।

कवित्त

समरथ जननि भय भंजनि बिरद तेरो,
महाभयभीत हमैं भयते निवारिले ।।
गरीब निवाजिनी गरीबन विदीत वानो,
जानिकै गरीबन निवाजसी विचारिले ।।
अक्षर अनन्य भनै करुणा निधान बानि,
करुणा सुजानि दीन देवतानि तारिले ।।
मारत निशुंभ शुंभ संगर संहारत है,
आरत निहारि देवि अब्ब कै उबारिले ।।

सवैया

ज्योंमधुकैटभकोबधकैविधिराखिलियेअपनेकरकंजनि
ज्योंमहिषासुरको हतिकैसुरपालिसबै सुखदैदुख गंजनि
त्योंवो पुकारत आरतहैंहमैंमारत शुंभ निशुंभ निरंजनि
दीनबिचारिदयाकरिकै अब रक्ष हमैं शरणैं भयभंजनि

दोहा

इमि देवन अस्तुति करी, दानव डरनि बिहाल ।
तौलौं निकसी पार्ब्बती, मज्जनको तिहिकाल ।।
देखि सुरति श्रीपार्ब्बती, बचन कहे मुख एव ।
किहि की अस्तुति करतहौ, कित आये सब देव ।।
इती कहत श्रीगौरि मुख, निकसी शक्ति अनूप ।
ता निकसत श्री गौरिको, ह्वैगयो श्याम स्वरूप ।।
देखि गौरि ठाढ़ी भई, अजब अम्बिका शक्ति ।
ज्वाब दियो उन गौरि कहँ, जानि सुरनकी भक्ति ।।

ईश्वर्य्युवाच-सोरठा

असुरन डर करि रौर, मेरी अस्तुति करत सुर ।
तिहि कारण सुनु गौर, स्वयं सिद्ध प्रकटी सो मम ।।

छप्पय

स्वयं सिद्धि औतार स्वयं शोभातन शोभन ।
स्वयं ज्योति आकार स्वयं विद्या गुण थंभन ।।
स्वयं शस्त्र संयुक्त स्वयं ऐश्वर्य प्रवर्तन ।

स्वयं सैन्य सम्पन्न स्वयं कृत कर्म निवर्तन ।।
चढ़ी स्वयं सिद्धि निज सिंहपर ब्रह्मादिक संकटहरनि ।
ह्वै प्रगट अम्बिका रूप इमि स्वयंसिद्धि समरथ जननि

सोरठा

समरथ जननि अधार, श्री भवानि भय भंजनि ।
करन असुर संहार, प्रगट अम्बिका रूप इमि ।।

त्रिकूटगति छन्द

ह्वै प्रगट अम्बिकारूप उदित त्रिविधि सिंहविमान मुदित
अस्त्र शस्त्र प्रभाव मुदि अभिभूत अद्भूत काइ ।
निज प्रेम ज्योति प्रभाव पूरति सच्चिदानन्द मूल मूरति
कोटि चंद सुछन्द सूरति सु प्रकाश प्रभाइ ।।
इति श्री भवानि स्वरूपदरशत अमर मुनिजन प्रेमसरसत
नैननीर प्रबाह बरसत सरस पुर अनुरागि ।
कियप्रणवकोटैबृंग कायनिकरत अस्तुतिविविधिभायनि
कृपिण जिमिधन कोटि पायनि तिमिहिं पायँनिलागि ।

मृदुल छन्द

पाँयनलागिरहैंयहिविधिसुरविधिवतपूजिपूजिमनकामना
श्रीजननिवरअस्तुतिकीनसुरसबभक्तिभक्तिमनभावना ।
कीनसुभयभीतजानिभयनृभयरहुममराजरजावतबालिका
तुमहितकोपवंमंडिरणखंडि असुरसमस्तसुरसालिका ।।

छंद

इमि जननि वचन बखानियो सुनि सुरन जीवन जानियो ।
करि प्रणव पवन प्रमोदियो ।सो नृभय भय सबको दियो

सोरठा

तब समरथ जग माय, अमर छिपायो कंदरा ।
आपुन समर उपाय, रतन शिखर राजी जननि ।।

दोहा

रत्न शिखर राजी जननि, धरि अति अद्भुत रूप ।
नीव दई संग्रामकी, जा सुनि मोहे भूप ।।

हंस छंद

तहां आय कहुं असुरसमूह ।बूढ़त सुरन करन रण कूह
रतनशिखरदरशीजगमायजगमगज्योतिज्वलितछबिछाय ।।

गीतिका छंद

दिव्य सिंहासन विराजति दिव्य मूरति बालिका ।
दिव्य भूषण बसन सुंदर दिव्य ज्योति त्रिपालिका ।।
दिव्य माणिक मुकुट जगमग दिव्य मणि ताटंक है ।
दिव्य नयन विशाल झलमल दिव्य भृकुटीबंक है ।।
दिव्य लाल ललाट सोहै दिव्य मुक्ता नासिका ।
दिव्य हार सुढ़ार हिरदय दिव्य ज्योति प्रकाशिका ।।
दिव्य अंगद बाहु मंडित दिव्य कंकण कर लसै ।

दिव्य सुन्दर अत्रमुक्ता दिव्य किंकिणि कटि बसै ।।
दिव्य पैंजनि पायँ घुंघरू दिव्यनूपुर अति बनै ।
दिव्य रूप श्रृंगार नख शिख दिव्य भूषण हैं घनै ।।
दिव्य पुष्पनि पाणि कंदुक लीलही उच्छारही ।
इमि लसत दिव्य स्वरूप देवी दृष्टी कौन पसारही ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शक्रादिस्तुतिकथनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ।। ४ ।।

दोधक छंद

अद्भुतज्योति प्रकाश प्रतापी । बातकछू नसकै कहिपापी
चकृत ह्वै मुरके सब गाता । जाय कही नृपसों यह बाता

मोदक छंद

सुनहु नृपति हम हिमि गिरि गाता ।
एक अमर कन्यहि रजताता ।।
ज्वलित ज्योति अतिकर तिहितापा ।
लेहु बुलाय जगतपति आपा ।।

दोहा

सुनत राय सुख पायकै, दूत भेजि ततकाल ।
गयो पतित राजति जहां, जगत जननि तन बाल ।।

मुरलि छंद

जगत जननि तन बाल रतन गिरिराजही ।
कोटि चन्द सो छन्द परम छबि छाजही ।।

देखि दूत चित चकित हिये डरि शापते ।
परि हांकरि परणाम जु पायँनि वानते ।।

ईश्वर्य्युवाच-अरिल्ल छंद

लहिप्रणामचितई जगबंदनि । त्राहि त्राहि भाषहिसुरचंदनि
बूझिप्रष्णाकस तू भ्रमभूल्ल्यो । सुनत दूतकरजोरत बुल्ल्यो

दूत उवाच-चतुष्पदी छंद

सुनिये सुर नंदनि त्रिभुवन चंदनि हौं नृपशुम्भपठायो ।
सुनि तुव गुण रूपहिसुयशअनूपहि भूपतुमहिमनलायो ।।
चलि उठि आपुन तजि हठता पुन तपसी को फल लीजै ।
सेवै शिव पाँइन ह्वै ठकुराइनि राजत्रिपुरको कीजै ।।

देव्युवाच-धत्तानन्द छन्द

सुनि दूत वचन इतिरणउद्दिमचितै,
जगत जननि बुल्लिव बयन ।
बालातपसिनि मम और न मोसम,
चलहुं आज जाके अयन ।।
मोंगरबबढ़्यो अतिपरकोपितपर,
कोपतिकोपिछार त्रिभुवन करहुं ।
मोहिंजीति सकै रण हेर सकै तन,
मद मरदै मैं ताहि बरहुं ।।

तोटक छंद

सुनिदूतमहामनरोषबढ्यो । भनिदिव्यकहामधुतोहिंचढ्यो ।
नृपशुंभनिशुंभ अभूतबली । सबदेवनकी जिनफौजदली ।।
तिहिकेडरभागिदुरोहरि है । तिहिसोंकिमितैं अबलालरि है
चलिमानिकहौसुखराजकरौ । किनपावकपुंज पतंग जरौ ।।

देव्युवाच-मोटक छंद

सुनत जननिभीन गजतु किंतु शठ ।
मम तपसिनि किमितजहुं आपु हठ ।।
समर स्वयम्बर हमरे एकह ।
करन समर नृप अग्र जाय कह ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
देवीदूतसंवादो नाम पंचमोऽध्ययः ।।५ ।।

दोहा

सुनत दूत आतुर गयो, कह्यो नृपति सों जाय ।
युद्ध स्वयम्बर उहि रच्यो, चलहु सुसजि द्विजराय ।।

पद्धरी छंद

सुनि राय तुरतधूम्राक्षबोल । दियपान हुकुमसोय है खोल ।
मारियोसमर्थ जोकरिसहाउ । गहिकेशकिशोरीपकरिल्याउ ।

सरस्वती छंद

सुनि धूम्रलोचन शूरलै नृपनाथको शिर नायकै ।

सहस दैत्य सँग साजिकै पहुँच्यो हिमाचल जायकै ।।
सेना तुरत ठाढ़ी हिकै चढ़ि रत्न शिखरन्ह आपही ।
दरशी तहां जग जननि कन्या रूप प्रेम प्रतापही ।।
सोरठा परम प्रताप अपार, श्रीभवानि भय भंजनी ।
देखि असुर तिहि बार, रह्यो चकित चकवायकै ।।

आभीर छंद

देखि जननि भनि बैन । को तू चितवत नयन ।।
सुनिहीकै दलपाल । बोल्यो बोल कराल ।।

धूम्रलोचनोवाच-दोहा

तू जो कह नृप दूतसों, युद्धस्वयम्बर चाउ ।
हौं गहि केशहि लै चलतु, कहिको करत सहाउ ।।

लघुनराच छंद

यती सुनत शंकरी । कछुक श्वास हंकरी ।
जरयो सो दुष्टदार भो । छिनंक मांझ छारभो ।।

नराच छंद

जरंत धूम्रलोचनै समस्तसेन धाइयो ।
महा करालकालसे शराल क्रुद्ध छाडियो ।।
अनंत अस्त्र शस्त्र छंडि मंडि युद्ध रिन्धको ।
सो देखि मातु हंकिकै हुँकार दीन सिंहको ।।

महानराच छंद

हुँकार पाइ सिंह पिंगु हिंगलाज मातको,
नृसिंहते प्रसिंह जोर घोर गर्वकी लही ।
परयो कराल कालसे बिमाल पुंज कड्ढिकै,
तबड्ढिकै प्रकोप ओप बड्ढियो दुशीलही ।।
भनै अनन्य चाव धन्य भिन्न भिन्न सैनकी,
त्रिनैनकी प्रभा यथा तथा प्रभाव डीलही ।
विदारि ठौर ठौर कौर कौर कीन्ह भक्षही,
समस्त रक्ष यक्ष भक्ष लीलि लीन लीलही ।।

मनोरमा छंद

लीलिलीनलीलहियसैनसबनैन अस्तअतिअयन प्रयजनु
प्रर्दि मर्दि करि गर्द मर्दि रिपु कीन मर्दतन श्रोन सुमंजनु ।
निरखिहर्षिसुर वर्षि पुहुप झखि झखियुद्धयोधारण रंजनु
झारि भूमि मदघूमिरण गंजिगंजनिगजिगंजसोइगंजनु ।।

रोलाछंद

प्रबलकेशरी सिंह शत्रुमारें गिरि जायसों ।
असुर भग्गुलनि दौरि रौरि कीनिय नृपरायसों ।।
सुनत नृपति अति कोप चंड मुंडहि दियो आयसु ।
ल्यावहि अबलहि अबल मारि सिंहहि घिरि पायसु ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शुंभनिशुंभसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ।। ६ ।।

छप्पय

राज हुकुम दलसाजि गाजि धाये गण दैयत ।
करत शोर बरजोर घोर गर्जत मद मैयत ।।
अति कराल विकराल लाल बक्त्रनि बल गर्वत ।
लीन हर्षि धनु शरनि करनि फेरत तरु पर्वत ।।
आकूत अनंत अनन्य भनि निरखि अमरसेना डरिय ।
इमि चंड मुंड अवलोकि रणसुलोक लोकखलभलपरिय ।।

तोमर छंद

लोक लोक खलभल परिय । इमिचंडमुंड सेना चलिय ।।
हंकिहंकि बंकट बिकट । आनिगर्जि गिरिवर निकट ।।
तब जननि दानवन देखिय । इति सिंहअकेलविशेषिय ।।
तहँ कोपि भृकुटि चढ़ाय । बलि कालिका उपजाय ।।
उपजीति कालि कराल । श्री जननि रोष रिसाल ।।
तन श्याम तासु सखीनि । घन सघन केशवखीनि ।।
भृकुटी कुटील जुटवार । अति झलक पलक ललार ।।
गिरि कंदरा सुर नाभ । अति पवन पुंज प्रसाभ ।।
वाऐति बदन अनंत । शिखरहि सुदंत लसंत ।।
रसना अरुणा अति घोर । दृग अग्नि कुंड प्रजोर ।।
बढ़ेति रोम शरीर । है नाभि समुद गँभीर ।।
प्रज्वलित परम प्रचंड । आनन सो भुज वरदंड ।।
कर पाश असि धनु बान । पग धरणि शिर असमान ।।

अति बिकट भ्यानक बात । गज चर्म श्रोण चुचात ।।
उर रुंड मुंडन माल । उर गगन हैफत ठाल ।।
बल प्रबल अश्वसवार । किय जननि चर्ण जुहार ।।

महानराच-छंद

जुहार जक्त मातको सुनात कालिका कही,
बढी प्रकोप ओप शत्रु लोभ चित्त भाइगे ।
खईतिच अकाश लों वकाश दीसि पेनहीं,
प्रकाश तेज पुंज रोमरोम रोष छाइगे ।।
भनै अनन्यभेष भिन्न क्षोभबक्रको कहै,
त्रिलोक है अकूत भूत प्रेत ताप ताइगे ।
सो देखि दानवानके न जानि प्राण किं गये,
गजंति सिंह ज्यों शशेशशेवहीं ससाइगे ।।
समाइगे दयत्त सर्व देखि कालि चंडिकै,
प्रचंड चंड मुंड त्रानलीन त्रासही ।
कुठार खड्ग तोमरो त्रिशूल चक्र शायकै,
समायकै समस्त अस्त्र शस्त्र वर्ष भालही ।।
भनै अनन्य यो अनंत अस्त्र कंजिते चले,
कितेक लीलि लीन देवि वक्रमें विलासही ।
समस्त रक्ष यक्षपक्ष हत्थ पै लुढ़ायकै,
उड़ंत दम्बि सन्न एक श्वासकी उसासही ।।
उसासही उडंत आस पास दीह दैयता,

प्रमैयता हसंत अट्टहास ग्रास चाहिनी ।
गजंति कोटि गंजसी सुबाजसी लवानिज्यों,
भवानि दानवानकी अमानि सैन दाहिनी ।।
भनै अनन्य भिन्न कर्म भैरवी तिसैरवी,
खेलिकै खिलंति दंति पंति स्वर्ग बाहिनी ।
प्रचंड चंड मुंड के सुहंड गुत्थिकै सही,
अखंड श्रोण सिंहको पियंति प्रेम बाहिनी ।।
पियंति श्रोण सिंह सैन सर्वको प्रहारिकै,
अहारकै डकार संचकार शत्रु शालिका ।
विदारि चंड मुंड रुंड मुंड गुंथि मालिका,
विशाल माल डारि चर्म ओढ़ि रक्त लालिका ।।
भनै अनन्य जैति चित्त जित्ति युद्ध ज्वालिका,
प्रझूमिकै प्रमत्त रंग भूमि चंड चालिका ।
अट्टहास रास आस पास रूप ज्वालिका,
सोअग्र जक्त मातुके नचंति मातुकालिका ।।

दोहा

कोटि काल बल कालिका, गंजै असुरकराल ।
भागि भगोलनि रौरकिय, सभाशुंभ भूपाल ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
चंडमुंडवधो नाम सप्तमोऽध्याय: ।।७।।

पद्धरीछंद

सुनिगौरिगणेशपरजरितरिन्द । दियपानबोलबलरक्तविन्द ।
तबरक्तविन्दलैपानगज्जि । ततकालचल्योबहुसैन सज्जि ।।
पच्चासकोटिसावँतप्रचंड । लक्षनि रक्षसदैयत अखंड ।।
अर्बनि गयंद खर्बनि सवार । पद्मनि पैदल लागे पुकार ।।
इमि रक्त बिन्ददल सजि धाव । हुंकरत दैत्य अतियुद्धचाव
धरिधरणिलचकिअकुलानशेश अतिकंपुभयोबसुधाक्लेश
तिनदेखिजक्तमाताबिचार । काली अकेलिकिमिसकहिमार
इमिचिंतिमातुचितमूँदिनैन ।। प्रकटीतुरंतमुखशक्ति सैन
निजब्रह्मशक्तिकढ़िहंसतिष्टि । धरिब्रह्मरूपजिनरचीसृष्टी ।।
पुनिविष्णुशक्तिकढ़िगरुडरत्थ । ह्वैविष्णुविश्वपालहिंसमस्थ
पुनिरुद्रशक्तिकढ़िचढ़ेनन्द । ह्वैरुद्रप्रलयत्रिभुवननिकंद ।।
पुनिइन्द्रशक्तिकढ़िचढ़िगजिंद्र । जिनवृत्रहन्योधरिरूपइन्द्र ।।
कौमारिशक्तिकढ़िचढ़ियशोर । कौमारिरूपसुरबन्दिछोर ।।
बाराहशक्तिकढ़िमहिषचढ्ढ । बाराहरूप धरि धरणि डढ्ढ ।।
नरसिंहशक्तिकढ़िअतिप्रचंड । नरसिंहरूप जिन असुरखंड ।
पुनिकढीभद्रकालीकराल । समकालशक्तिकालीकराल ।।
पुनिशिवदूतीकढ़िकालदंड । चढ़िकालशक्तिप्रकटीप्रचंड ।।
पुनिपवनशक्तिप्रकटीप्रजोर । अरुअग्निशक्तिउपजीतिघोर
पुनिवरुणशक्तिप्रकटी गँभीर । कौबेरिशक्तिगिरिमेरुधीर ।
इत्यादि देव शक्तीन अर्व । जगमातु श्वास प्रकटी तिसर्व ।।

कुंडलिया

प्रकटी इमि जगमातु मुख देव शक्ति सबआनि ।
सब देवनकी देहमें ए बरदायक जानि ।।
ए बरदायक जानि करनि चित निष्कृत कायक ।
इन बिन वे लघुमान इनहिं भजिबे सबलायक ।।
इन लगु उन बलतेज दून कबहूं नहि निघटी ।
महा प्रलय सब शक्ति जगत माता मुख प्रकटी ।।

सोरठा

प्रगटि शक्ति इमि सर्व, किय प्रणाम जगजननि-कहँ ।
जननि जानि रिपु गर्व, रण गंजन आयसु दियो ।।

सवैया

लहि आयसुधायरिसायसुरीगलिगाजपरीभकरुंडनिमें ।
जितही जित दैयत आनिअरैंतितहीतितमारहिमुंडनिमें ।।
भन अक्षरव्योम महारिपु छैरति पैरतिश्रोणितकुंडनिमें ।
बलकेहरि ज्यों दलकेलिकरैं अरिकुंजनिपुंजनिझुंडनिमें ।।

नराच छंद

सुझुंड शत्रु सैनमें सुशक्ति सर्व गर्जहीं ।
जहाँ तहाँ निहारिकै सम्हार मारु बर्जहीं ।।
कहूंक ब्रह्म शक्ति ब्रह्म शस्त्र शत्रु खंडहीं ।
कहूंक विष्णु शक्ति विष्णु शत्रु मारु मंडहीं ।।

कहूंक रुद्रशक्ति रुद्र शस्त्र शत्रु चूरहीं ।
कहुंक इन्द्र शक्ति इन्द्र शस्त्र दैत्य पूरहीं ।।
कहूं बराह शक्ति वार शस्त्र मोर मंजहीं ।
कहूं नृसिंह शक्ति सिंह शस्त्र शत्रु गंजहीं ।।
कहूं कुमारि शक्ति मारु शस्त्र सों विदारहीं ।
कहूंक अग्नि शक्ति अग्नि शस्त्र फौज जारहीं ।।
कहूंक पौन शक्ति पौन शक्तिसों उड़ावहीं ।
कहूंक नीर शक्ति नीर शक्तिसों बुड़ावहीं ।।
कहूंक कालशक्ति काल शस्त्र शत्रु क्षय करैं ।
कहूंक कृष्ण शक्ति कृष्ण शस्त्र युद्ध जै करैं ।।
अनंत देव शक्ति अस्त्र शस्त्रयों तनं धरी ।
प्रमत्त रक्तबिन्दकी समस्त सैन संहरी ।।

चामर छन्द

सैन सर्ब्ब सहरी सुरक्त बिन्द देखिकै ।
कोपिके प्रचण्ड बाण लीन तीख सज्जिकै ।।
समर्थ रत्थ अश्व साजि बाजि गाजि पिल्लिकै ।
मीचु ज्यों डरैसि सिद्धि शीश प्राण मिल्लिकै ।।

मुचकुंद छंद

शीश प्राण मिलि मिल्लियुद्धकहँक्रोधरूपदल पत्तिकढं
अति कराल बिकराललाल तनकोपज्ज्वालपरज्वालबढं
धरि प्रचंड घन दंड चंड शर मंडियुद्ध रस क्रुद्ध भयं ।
भवति हूह शरजाल बाहरन लोक लोक भय कूह भयं

दोहा

लोक लोक भय कूह लहि, गहित बज्र बजरंग ।
यह शक्तै कीनिय पशर, पिल्लि गजेंद्र अभंग ।।

मोतीदाम छंद

झुकी सबमैं इन्द्रानि अकेलि । दलप्पतिपै ऐरावत पेलि ।।
फिरावति बज्रमहाबजरंग । हत्यो झुकि दैयतयुद्ध अभंग ।।
महाबल दैत्य सुमेरहि तूल । लगेतिहिबज्रहि ज्यों लघुफूल
गजैतनफूलतजैशरक्रुद्ध । लग्यो अतिहोनपरस्पर युद्ध ।।
टुटैंजुरिबाणनिबाणअखंड़ । झरै तिनतेअतिज्वाल प्रचंड ।।
बिलोकित्रिलोकिपुरीरिपुअत्र । उडैंउड़गणज्योंअंधिनमत्र ।
भयोइमियुद्धमहाघनघोर । महाभय भो भवमंडल शोर ।।
गजैवलदैयतसंगरचाव । लगे नहिं तातने नेकन घाव ।।

सोरठा

लगै न लातन घाय, इन्द्र शक्ति हठि हठि चकित ।
तब सब शक्तिनि आय, घेरय़ो रिपु चहुं ओरते ।।

तोमर छंद

सब ओरते घिरि राव । कीन्हो जो सबनि भिराव ।।
ब्रह्मी हन्यो विधि दंड । वैष्णवी सुचक्रनि खंड ।।
रुद्रिहि त्रिशूलनि छेदि । इन्द्रि सो बज्रनि भेदि ।।
काली खड्ग बहु कीन । कृष्ण शक्ति उर दीन ।।
बाराहि दंत बिदारि । नरहरी पंजन फारि ।।
शिवदूति फरशन मारि । किय छिद्र छिद्र बिदारि ।।

दोहा

इमि सब मिलि घायल कियो, रक्त-बिन्द मद-मत्त ।
जिमि वर्षै घन घोर झरि, तिमि तन वर्षै रक्त ।।

नाराच छंद

जो रक्तबिन्द रक्त बुन्द भूमि माहिं सो परयो ।
तितेक रक्तबिन्दसों अनन्त दानवा खरयो ।।
समूह वारपारहू रक्त बिन्द पूरियो ।
मरैदुनी दपेटही चपेट शैल चूरियो ।।

सोरठा

चूरिय चरन सपल्ल, लोक लोक खल भल परिय ।
रहियन भजन गयल्ल, दिशि विदिशन दैयत बडे ।।

त्रिभंगी-छंद

बढ्ढे बहु दैयत अति मद मैयत रिस तप तैयत तरुमंडै ।।
पलपलपल गर्वतधरिधरि पर्वतझुकिझुकिसर्वतशरछंडै ।।
देखतिइमिशत्रुनिसमरसमर्थनिधरिधरिअस्त्रनिदेवझुकी ।।
वाहनरिपु हंकरिशारँग टंकरि करिकरिबंकरि दैत्यहुँकी ।।
करिकरि अति क्रुद्धः बिरचिबिरुद्धः परमतशुद्धः युद्धजुरी
छंडति बहुबाणनिखंडतिदाननिद्विरद अभाननिहंतिसुरी ।।
तीक्षणशरः वर्षति बाकबिकर्षति हानिरिपु हर्षतिरातमुखी
सन्मुखरणमंडतिखंडनि खंडति ब्याहबिहंडतिइदनरुखी

गहिगहि गज गंजनिरथपथभंजनिबहुरणरंजनि रणरंगी ।।
करिअसुर सुमारनिधूमधुमारनिपरनिझमारनिबहुसंगी ।।
बहुश्रोण भभक्कति शैल्ह धमक्कति खङ्ग चमक्कति रत्तसनै
रिपुलुत्थहिलुत्थनिगुथगुथगुत्थनिजिम्मिगजयुत्थनिसिंहहनै
हनिदानवजूहनि करिकरिकूहनि करति फतूहनिबाहुबरं ।।
ढहढहरिपु झुंडह हति भुजदंडह उछरत रुंडह श्रोणसरं ।।
श्रोणादिक आगरअमरउजागर मिलिसनसागरऐष्णाबरं ।।
बूड़े नवखंडहिझिलति ब्रह्मांडहि महिमंडलदलकौनकरं ।।

दोहा

इमि सबसैन सँहारि रण, रत्तबिन्द तन बद्धि ।
पुनि ज्यों अकिलो रहिगयो, धरधरकत महिमद्धि ।।
बार हजारन संहरे, देवि न करि करि कूह ।
रत्तबिन्दुके रत्तते, फिरिफिरि जुरत समूह ।।

गहीर छंद

इमि मारति रणझारति जिमि मारति अति त्यों बढ़ै ।
लल संम्मर रिपु डंम्मर डरिअंम्मर हाहा रढ़ैं ।।
अरि सैनहिं करि ऐनहिं नहिं चैनहिं दै दै तबै ।
करि शोचनि हरि लोचनि अरि मोचनि देवी सबै ।।

सर्वदेव्युवाच पद्मावती छंद

मातु सुनो यह बात थकी हम सर्व सुरी ।
ज्यों हति त्यों अति बाढ़ि दशौदिशि सैनपरी ।।

आरत देव पुकारतही भयभीत सबै ।
श्रीभयभंजनि मातु हरौ भय घोर अबै ।।

मरहट्टा छंद

सुनिबिनयनिरंजनि श्रीभयभंजनिप्रबल सिंहपरचढ्ढी ।।
चढ्ढी हरि हुंकरि शारँग टंकरि करन युद्ध हूँ ठढ्ढी ।।
ठढ्ढी लहि उद्दित मातु प्रमुद्दित अनहद नौबत बज्जी ।।
बज्जी सुर दुन्दुभि मुदि नभ कुंभभि अग्रकालिकागज्जी ।।

दोहा

गर्जि सकल शक्तिन सहित, लहि रण युद्ध जुझारि ।
कीन पसर परमेश्वरी, वाहन सिंह हुँकारि ।।

महानराच छंद

हुंकार सिंह राजको गरज्जि सिंह-बाहिनी,
सुवाहिनी समेत भूत प्रेत अग्र दै लियो ।
दयंत श्रोण भागिनीति योगिनी अनी नची,
सुयुद्ध जानि रुद्ध खानि पानि खप्परै लियो ।।
भनै अनन्य चाव धन्य श्री जनन्य हूलिकै,
त्रिशूल कैद लेइ छेद गुल्ल तुल्लकै लियो ।
दियो हुँकार सिंहघोर बढ्ढिकै बकक्त्रलोर,
कत्तसों रक्तबिन्द कालिका अँचेलियो ।।

विजयछंद

रक्तसोंरक्तबिंदादिदेरक्षसाभक्षिलीन्ह्योसबैकालिकाभोगिनी
शक्तिसैनालिमेंजत्तमाताहँसेजयबिराजविजयतेप्रभादुर्गनी ।

हैदलसो हैदल पैदल पैदल इहि बिधि द्वैदल कोपपुरे ।
जापर जो ओरवततकितन बाधत सावधान जुरियुद्धजुरे ।।

भुजंगप्रयात छंद

जुरेयुद्धयोधादुहूँओरजोरं । हहंकारिहंकारिकैक्रुद्धघोरं ।।
तजै अत्रपै अत्रठातत्रओडैं । तकैदांवपे दांव आबद्धछोडैं ।।
जुटैं त्राणसों त्राण ज्वाला झरैहैं । टुटै बाणपैबाणभूपैपरैहैं ।
चलैं चक्रपै चक्रशक्रादिकंपैं । झरैखड्गसोखड्गज्वालाबितंपैं ।
कहूँशेल्हपैं शेल्हमेळे चमंकैं । कहू शूलपै शूल हूलै धमंकैं ।
कहूँबज्रसोंबज्र बाजैंकरालं । कहूँगुर्जसौं गुर्ज वर्षंत ज्वालं ।
कहूँ अस्त्रपै अस्त्र श्रीदेविछंडैं । घने शस्त्रपैशस्त्र दै भारभंडे ।
कहूँब्रह्मनी ब्रह्मदंडै प्रहारैं । महाघोर दानौं अमानैन मारैं ।।
कहूँ वैष्णवी चक्रसोसैनछंटे । हुवे युद्ध भारी मचैबोहुटंटैं ।।
कहूँरुद्रनीहूंल शूलै धंमकै । महाघोरदानौं हृदयमें चमंकैं ।।
कहूँ इन्द्रनी बज्रसोंशत्रुचूरैं । कहूंबाणबाणावली युद्ध पूरैं ।
कहूँकूर्म शक्तिसुहत्थीविदारैं । कहूँ अंकुशमारिकैंमुंडफारैं ।
कहूँबारहीं दंतही दैत्य दाहैं । कहूँमारिठं का ठकै सैन ढाहैं ।
कहूँनारसिंही महापुंज भंजैं । कहूँ गर्ज्जही गर्ज गजराजगंजैं
कहूँचंडिकारत्थसोंरत्थमारैं । कहूँहत्थियाहत्थियासोंपछारैं ।
कहूँकालिका युत्थकेयुत्थभक्षैं कहूँसांसहैसैनआकाश गक्षैं
कहूँ अर्जिका भिड हो भिंडि मारैं । कहूँचर्नचर्नकै चूरडारैं
कहूँबारुणीदारुणीबारबाहैंकहूँज्वालिनीज्वालमालानिदाहैं ।

धकपक बिधि शेष विधु भानु सचकति ।
चलात जु प्रबल निसुम्भसु पृथुल दल,
जल थल विकल सकल महि मचकति ।।

दोहा

धावत प्रबल निशुम्भके, बज्जत तबल निशान ।
महि मचकति लचकति अचल, विचल अमर शशिभान ।।

रेखता

निश्शानदै आव निश्शुंभ चतुरंग दल,
लियो सब संग बज्रंग हिल्ली ।
हंकरत संग देवंक डंकानि सुनि,
शंकशक्रादि सुरदेह ढिल्ली ।।
सौरौरि गुणगौरि शिरमौर कछु कोप करि,
ओपकरिचक्रज्यों चक्र चिल्ली ।
महासत्र गजराज गनजानि गलगाज,
मृगराज संमाज संफौज पिल्ली ।।

दोहा

पिली सकल शक्तै इतहि, उतहि प्रबल रिपु क्रुद्ध ।
हंकि हंकि बंकट बिकट, अभै उभै जुरि युद्ध ।।

त्रिभंगी छंद

जुरियुद्धनि योधा युद्धप्रबोधा करि करि क्रोधा रण ठाढे ।
हत्थनिसोहत्थनिरत्थनिरत्थनिसमरसमर्त्थनिमनबाढ़े ।।

हैदलसो हैदल पैदल पैदल इहि बिधि द्वैदल कोपपुरे।
जापर जो ओरवततकितन बाधत सावधान जुरियुद्धजुरे ।।

भुजंगप्रयात छंद

जुरेयुद्धयोधादुहूँओरजोरं । हहंकारिहंकारिकैक्रुद्धघोरं ।।
तजै अत्रपै अत्रठातत्रओडैं । तकैदांवपे दांव आबद्धछोडैं ।।
जुटैं त्राणसों त्राण ज्वाला झरैहैं । टुटै बाणपैबाणभूपैपरैहैं ।
चलैं चक्रपै चक्रशक्रादिकंपैं । झरैखड्गसोखड्गज्वालाबितंपैं ।
कहूँशेल्हपैं शेल्हमेळै चमंकैं । कहूं शूलपै शूल हूलै धमंकैं ।
कहूँबज्रसोंबज्र बाजैंकरालं । कहूँगुर्जसौं गुर्ज वर्षंत ज्वालं ।
कहूँ अस्त्रपै अस्त्र श्रीदेविछंडैं । घने शस्त्रपैशस्त्र दै भारभंडे ।
कहूँब्रह्मनी ब्रह्मदंडै प्रहारैं । महाघोर दानौं अमानैन मारैं ।।
कहूँ वैष्णवी चक्रसोसैनछंटे । हुवे युद्ध भारी मचैबोहुटटैं ।।
कहूँरुद्रनीहूंल शूलै धंमकै । महाघोरदानौं हृदयमें चमंकैं ।।
कहूँ इन्द्रनी बज्रसोंशत्रुचूरैं । कहूंबाणबाणावली युद्ध पूरैं ।
कहूँकूर्म शक्तिसुहत्थीविदारैं । कहूँ अंकुशमारिकैंमुंडफारैं ।
कहूँबारहीं दंतही दैत्य दाहैं । कहूँमारिठं का ठकै सैन ढाहैं ।
कहूँनारसिंही महापुंज भंजैं । कहूँ गर्ज्जही गर्ज गजराजगंजैं
कहूँचंडिकारत्थसोंरत्थमारैं । कहूँहत्थियाहत्थियासोंपछारैं ।
कहूँकालिका युत्थकेयुत्थभक्षैं कहूँसांसहैसैनआकाश गक्षैं
कहूँ अर्जिका भिड हो भिंडि मारैं । कहूँचर्नचर्नकै चूरडारैं
कहूँबारुणीदारुणीबारबाहैंकहूँज्वालिनीज्वालमालानिदाहैं ।

कहूँखेचरी भूचरी मारि दैनी । कहूँयक्षनीरक्षनीभक्षिलैनी ।।
कहूँयोगिनीभोगिनीश्रोणसैन्यैकहूँशंखनीडंकनीफूलमन्यै ।
कहूँप्रेत फूलेरुधिरनीरन्हाहीं । कहूँभूतभैरोंलियेलुत्थजाहीं ।
कहूँ लुत्थपैंलुत्थ दैयन्त लुट्टैं । कहूँरुंगना शूरमालुत्थटुट्टैं ।।
कहूँ मुंड कट्टे परे भूमिभारैं । कहूँ रुंड घूमैं मनोमत्तवारैं ।।
कहूँ मुंड बिनरुंडलैखड्गधावैं । कहूँश्रोणलैपितृपिंडाभरावैं
कहूंघायलै घोर चिंकारखंकैं । कहूंघायभादौं नदीसेभभक्कैं
कहूंमत्तमातंगअभंगलुट्टैं । कहूंत्रुंगिया पत्तसे रत्थ टुट्टैं ।।
कहूंगिद्धउड्डैंभषैं श्रोण मांसं । कहूं सिद्ध बैठे सुदेखैं तमासं
भयोयुद्धयोंभूतभव्यैन अन्यं । बिजैईश्वरीकासुभाषै अनन्यं

पदाकुल छंद

जपअनन्य संगरजननीकै । दानौं झुंड मुंड बिनहीकै ।।
कीनमातुसुरमनमनहींकै । दानौ भागि गये रणहींकै ।।

महानराच छंद

कियत्ति रुंड मुंड झुंड दानवा बिखंडिकै,
अखंड शत्रु मारि वारि पारि सिद्ध सालिका ।
कपंति चन्द्र भान जान जात कौतुकीनके,
अकूत भूत प्रेतभू अभूत युद्ध जालिका ।।
भनै अनन्य चाव धन्य संग सिंह घोर ता,
प्रजोरता सो अन्य धन्य धन्य विश्वपालिका ।
समस्त शत्रु गंजि अस्त्र शस्त्रयों छिनक्कमें,
अनेक लक्षि लुत्थि भक्षि लीन माय कालिका ।।

पद्धरी छंद

कालिकासकलभक्षैदइत्त । देखतनिशुंभअतिरोषचित्त ।।
अतिगर्वगर्जिबिक्रालघोर । दशसहस्त्रबाहुधरिशस्त्र जोर ।।
दशदिशनिशस्त्रपूरेअखंड । खलभलिय विश्वजेतेब्रह्मांड ।।
तबसबदेविन हंकेबिमान । घालेनिशुंभ कहँ चंडिबान ।।
अतिबाणमहा गिरि बज्रतूल । लाग्योनिशुंभरकूदफूल ।।
काट्योनकटै अतिबिकटअंग । टारयो न टरैसंगर अभंग ।
मारयोनमरैजनुअमरकाय । जारयो न जरैदनुजेन्द्रराय ।।
हठिहीहठी थकिशक्तैसमस्त । पर्वतप्रमाणठाढ़ा प्रमस्त ।।
गलिगर्जिसकलशक्तिनमझाय । ईश्वरिसम्मुखधायोरिसाय ।
करखड्ग काढिरिसबाढिरीश दीन्योसुखड्गं झुकि सिंहशीश
तब सिंहासनअम्बासमत्थ । लिय ओडिखड्गवह आपहत्थ
अपखड्गकाढिरिपुदांवडाटि । झुकिखड्गअसुरभुंजासोकाटि
पुनि असुरकोपितिरशूललीन । श्रीमातु तुरततिर टूककीन
पुनिअसुरसांगलीन्हीप्रचंड । श्रीमातुतुरतकिय खंडखंड ।।
पुनि असुरबज्रघाल्यौसुरंत । श्रीमातु तमकि तोऱ्योतुरंत
तबअसुररोषखिसियाइगर्व । दशसहस्त्रबाहुसजिशस्त्रसर्व ।।
तबमातुसर्व खंडे सुहस्त । दशसहस्त्र बाहु काटे समस्त ।।
तद्यपिसमर्त्थमानीनहारि । धायोसम्मुखमुखवक्र फारि ।।
तबझुकिब्रह्मीशिरदंडदीन । वैष्णवीहनिचक्रनि खंडकीन ।।
रुद्रीत्रिशूलतीक्ष्ण बिदारि । इन्द्रीबज्रनि बज्रंग मारि ।।

कालीखड्ग निकियखंडखंडचंडिकाशक्तिशक्तिनिबिहण्ड ।
बाराहिहृदयदंतनिविदारि । नरहरी उदर पंजनहिं फारि ।।
केहरिनखनिनखशिबिहंडि । शिवदूतिपियेश्रोणितअखंडि
भैरवी चरणधरिरणकटोरि । शंखिनिडंकिनिभुजलीनतोरि
योगिनि प्रेतनि मिलि ठौरठौर । भक्ष्योराक्षसकरिकौरकौर
यह सुरन देख राक्षसक हाल । आनंद होवर्षौं पुहुपडाल ।।

दोहा

कौरकौर योगिनि करो, प्रबल निशुंभ नरेश ।
सुनत शुंभरिस पर जर्‍यो, अतिदुःख परमकलेश ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
निशुंभवधोनाम नवमोऽधाय: ।। ९ ।।

तोटक छंद

सुनिशुंभचलोसोकलेश किये । दलकीबलकीनसम्हारहिये ।।
अतिआतुर क्रुद्ध उछाह करै । मन देविन देवनको निदरै ।।
असिढ़ाललियेकढ़िक्रुद्धबढ़्यो जनुकोपि प्रलयकहँकालचढ्यो
इमिराजकढ़े सबनग्रकढ्यो । रकसी अरुराकसपुंजबढ्यो ।।
चलेकूहकरतदानवघनसे । यकसूट सबै इकही मनसे ।।
सबहूं कतकूकत धावत हैं । कर पर्वत वृक्ष फिरावतहैं ।।
घनघोरमहाअस गर्जतहैं । भुजठोंकिमहाबल सर्जत हैं ।।
सबधावत धाय धरा धचकै । नवखंड ब्रम्हंड सबै लचकै ।।
गिरिमेरुहलै सबलोककँपै । विधि विष्णुसुरेश्वर त्राहिजपै ।।

दशहूंदिशि कंपुभयोधरणी । नहिं दानव सैन परै बरणी ।।
खुरधारनि छार अकाशचढ़ी । छपिभानुप्रभारणरेणुमढ़ी ।।
पंचभूत कपंत अकूत भये । गजिजोरण आतुर आय गये ।।

कुंडलिया

आतुर इमि आयो नृपति, रन्न भूमि जुरि जूह ।
जूहकुटुँब जूझो निरखि, बाढ़ो शोकसमूह ।।
बाढ़ो शोकसमूह दुःखरुंदुत्तुरिसावब ।
सावबभ्रमहीं भीत इति रिपु देखि खिसावब ।।
देखि खिसावब शुंभसमर गरजतु गणमातुर ।
मातुर सम्मुख धाय पतित आयो अति आतुर ।।

सवैया

आतुर शुंभ गयो रणमें जहँ ठाढि भवानि गुमान गुरूरी ।
मूरतिवंत निरंजनि ज्योति दियेदृग अञ्जनरेखसिंदूरी ।।
सर्वश्रृंगार बिभूषित भूषण अस्त्र धरे कर संगर रूरी ।
पैस किशोर महासुकुमार प्रतापबली सब भांतिन पूरी ।।

दोहा

परम प्रताप स्वरूप लहि, रह्यो शुंभ चकवाय ।
अहंकारके कोपते, कहे बचन खिसियाय ।।

शुंभ उवाच गीतिका छंद

तू कहति जो मम युद्ध जीतहि तेहि बरहुंबर धारि ।

इन सकल देविन बललड़ति तोमैं कह बल नारि ।।
तब जानिहौं जब आपु बल संग्राम मोंसह साजु ।
पर बल स्वयंबर कब कह्यो करु स्वयं संग" आजु ।।

दोधक छंद

बातइतीसुनिकैजगबंदनि । दानहुं ज्याबदियोसुरचंदनि ।।
हौंअकेलिदुतियाजनिजानहि । सबममअंशप्रमानैमानहि ।।

मुचकुन्द-छंद

यों कहि आदिशक्ति जननी सब शक्तै बदनसमाइ लही ।।
ज्यों लहरैं उठि मिलै सिंधुते तिहितिह भिन्न भई न गही ।।
यों सबदेवि समाय आपुमहँ मातु सु आपुहि आपु रही ।।
आपु प्रभाव जनाइ प्रभावतिपतिनृपत्ति सों बात कही ।।

ईश्वर्युवाच-दंडक छंद

मैहों योगमाया मेरी मायाको बिलास विश्व,
मायाहीते मोहिं मूढ जान तब टेक मैं ।
मोहीं तैं पसारी सब मोहीमैं पसारो देखि,
मोही मैं समैंहैं सब मकरी बिबेक मैं ।।
आदि शक्ति मोही मध्य मोही अंत मोहीं शक्ति,
अक्षर अनन्य अन्य मिथ्या भ्रम भेक मैं ।
केवल मैं एक एक जानत अनेकनिमैं,
एक ते अनेक एक शक्तिहौं अनेक मैं ।।

दोहा

यदपि आपु समझावहीं, तदपि न समझो नीच ।
गर्जि अस्त्र छंदन लग्यो, सोहै मूढ़कि मीच ।।

छप्पय

गर्जिदुष्ट बल पुष्ट अस्त्र अस्त्रनि बहु छंडति ।
जिमी घेरि गिरी मेरु मेरु मंडल झरि मंडति ।।
परितबान अशमान बान बिन है रणसुज्झति ।
उलटि उलटि लै अस्त्रशस्त्र अपुही अपु जुज्झति ।।
कहि अक्षर भवति अकूत भव भवनभूतअद्भुत समर ।
सुरवर विरंचि वांछितकुशल सुत्राहित्राहि जंपतअमर

दोहा

त्राहि त्राहि त्रिभुवन मच्यो, भई महा रण कूह ।
घोर युद्ध दारुण मच्यो, शत्रुहु जूही जूह ।।

दंडक छंद

देरिव शस्त्रजूह अस्त्रजूह हूह लोकनिमें,
हूहकै फतूहको सम्हारि रिपुगंजनी ।
साधि धनुबाण चन्द्रबाणअरिप्राण लैना,
भृकुटी कमानसी चढ़ाय श्री निरंजनी ।।
अक्षर अनन्य कोपि अग्निते प्रचंड अग,
अंग प्रज्वलित ज्वालं मालतिन कंजनी ।
कैकै सिंहनाद सिंह पेलति रिसानी रोष,
गर्जि घोर बानी श्रीभवानी भय-भंजनी ।।

अमरगीतिका छंद

भय भंजनि गर्जी रणमैं । कीन पसर रिपुदलमैं ।।
कोप कृपा युत मनमैं । पेलि सिंह अति बलमैं ।।

दोहा

कीन पसर अरि झुंडपर, ज्यों पक्षिनमें बाज ।
ब्रह्मादिक कौतुक थकित, श्रीभगवति रण साज ।।

अमृतध्वनि छंद

श्री भगवति अति कोप करि धनुष बाणधरि हत्थ ।
प्रबल शुम्भदल बल मलति चलत चपल गति रत्थ ।।
रत्थहिचलति रथत्थहि धनु सुरकत्थहि करन करत्थहि ।
तहँ पथरत्थहि बैरिबिरत्थहि मत्थहि हतति समत्थहि ।।
असुबरभत्थहिभरतभरत्थहि अरधितिरत्थहि शुम्भगती ।
चरितु अरत्थहि अक्षर कहत्थहिधनुष धरत श्रीभगवती ।।

कमला छंद

धनु हाथ सो क्रुद्ध धरे समरत्थहि सरबरकी ।
उत अर्बन खर्बन रथ बलगर्वन शेषधंराधरकी ।।
कहि अक्षर अस्त्र ज़िते इतते सो तिते तिया करकी ।
हर स्वयम्भू आचम्भ करै यहि करतब अब करकी ।।

सवैया

गर्वितपासनिपासमहासुर झर्खति त्वर्गनिसोरिसतुर्ग्गा ।
वर्षतिबाणघनेघनशस्त्रनितर्खति ज्यों सकुनिष्पतिउर्ग्गा ।।

हर्षति ज्यौति विजै कहि अक्षर अक्षर देवनचालहि सुर्गा ।
ज्यों अति अद्भुतयुद्ध करीरिपुदारुणदुर्गबिदारण दुर्ग्गा ।।

दोहा

श्रीदुर्ग्गा रिपु दुर्ग हति, कतसंगर भकरुंड ।
खंड खंड खण्डे असुर, जित तित ढरकत मुंड ।।

महानराच छंद

डरे अखण्ड रुंड मुंड झुण्ड दीह दानवा,
अतुंड श्रोण कुंड बूड खंड खण्ड देहरी ।
जहां तहां निहारि भूरि पूरि श्रोण मासही,
तमासही चकित्त भूत प्रेत देतही हरी ।।
भनै अनन्य धन्य धन्य युद्ध श्रीजनन्यके,
न अन्य भूत भव्य वर्त्तमान जानिये हरी ।
ककेलिकेलिही दले समस्त दैयता गणा,
यथा अनंत दंति पंति हंति एक्केहरी ।।
हरं भयानि श्रीभवानि भूरि भारि टारिकै,
सुमारि झारि अस्त्र शस्त्र शस्त्र हस्तमेलिमें ।
उठे कबंध क्रुद्ध बुद्ध युद्ध कौत्र शुद्ध जो,
महा सनद्ध बद्ध बद्ध बुद्धिना पछेलिमें ।।
भनै अनन्य जोर जक्त मातु संग मंडिनी,
प्रचंड दानवा अखंड खण्ड खड्ग खेलिमें ।
समूहहूह कैद है लहै नहे किहे कहूं,

रहे बहे बहेति श्रोण सिंहकी दलेलिमें ।।
बहेति श्रोण सिंहकी ज्यों सिंहकी दपेट बाल,
पट्टकै झपट्टकै सो सर्व शस्त्र छाहिनी ।
ढलक्य ढाल कच्छ मच्छ खड्ग ग्राह गय तुजा,
भुजा भुजंग अंगुलानि दादुलाव गाहिनी ।।
भनै अनन्य अन्य अंग मंगजत्र जंतु जानि,
तत्र अस्त्र जाल जानु पन्हरारि हाहिनी ।
तहां महा समुद्रमैं विमुद्र रूप राजसी,
जहाँजसी बिराजमान मातु सिंहबाहिनी ।।

नगस्वरूपी छंद

प्रचंड सिंह बाहिनी । समस्त शत्रुदाहिनी ।।
बिलोकि शुंभ क्रुद्धकै । झुक्यो बिषाद बुद्धकै ।।
अनंत अस्त्र मुक्किये । सुदिव्यमात झुक्किये ।।
समस्त अस्त्र खंडियो । अभूत युद्ध मंडियो ।।
कियोतिक्रुद्ध चढ्ढियो । समान युद्ध बढ्ढियो ।।
परस्स सर्रछंडहीं । सुत्रान आन खंडहीं ।।
जुटंत अस्त्र अस्त्रसों । टुटंत शस्त्र शस्त्रसों ।।
तकंत दांवदांवही । झुकंत युद्ध चावहीं ।।
करंत हंकहंत हैं । धरंत धी निशंक हैं ।।
लरंत अंतरिक्षनं । करंत चामतीक्षनं ।।
पलंत शूल शूलकं । दलंत दावहूलकं ।।

चलंत जोर चक्र है । गजंत घोर चक्र है ।।
उठंत चक्र ज्यालकं । छुटंत तीर भालकं ।।
लगंत तीर पर्वतं । भगंत देव सर्वतं ।।
भिदंत ब्योमबान है । छिदंत हेलवान हैं ।।
अनंत युद्ध वित्त है । इतै उतै न जित्त है ।।
बिलोकि लोक कंपहीं । सुत्राहि त्राहि जंपहीं ।।
त्रिदेवशोक मंडहीं । उसास श्वास छंडहीं ।।

दंडक छंद

त्राहि त्राहि जपत त्रिदेवता विलोकि शोक,
लोक लोक भागि बड़े गिरिन गिरत हैं ।
श्रोणके समुद्रमें सुमुद्र सातो झिलि रहैं,
पर्वत से रिपु घाय झर्नासे झिरत हैं ।।
डड़से बहत रुंडमुंड झुंड जहां तहाँ,
देखत चकृत भूत भागत फिरत हैं ।
अक्षर अनन्य अंतरिक्ष लक्ष योजन पै,
अम्बा अरु शुंभकाल मीचु से लरतु हैं ।।

दोहा

दशहजार योजन चढ़ो, धरणी ऊपर श्रोन ।
कह अनन्य संग्रामको, बर्णन करिये कौन ।।
वर्णहुं का संग्राम गति, त्रिभुवन भवत अचह्म ।
देखत इमि अम्बा चरित, जकित हरीहर ब्रह्म ।।
फिरत चक्रसम उभय रथ, अंतरिक्ष रिसमंड ।

करत युद्ध हंकरत मुख, झरत अस्त्र अति चंड ।।
इहिविधि विविधि प्रकार करि, समर परस्पर बाढ़ ।
काल मीचु मानहु लरत, उभय महा रिसगाढ़ ।।

मरहट्टा छंद

बाढे रिसयुद्धहि विविबल बुद्धहि क्रुद्धहि शस्त्र चलंत ।
धरणीअसमानहि पूरिय बानहि भानहि बिरथ बलंत ।।
देवा अति आरतिदीनपुकारति मारति क्यों नहिं मातु ।
लीलारण खेलति दहिने देखति देखति खलक न मातु ।।

छप्पय

सुनिसुनि अमर पुकार समर कोपित भय भंजनि ।
टंकरि करि शारंग रंगरण भुवरण गंजनि ।।
अर्द्धचन्द्रपर बाण बाण अरिप्राण हरण धरि ।
तान कानपर्यंत कुटिल भृकुटी मरोरि करि ।।
अक्षर अनन्य सुदेवि इमि अति संग्रामकरि शर भरय़ो ।
नृप शुम्भ प्रचंड अखंड तन सुखंड खंड खंडन करय़ो ।।
जयति सिंह असवार जयति संगर भुज पंकर ।
जयति ब्रह्मधनुधार जयति सुरलभ ध्रुव शंकर ।।
जयति महा प्रभु तार जयति मधुकर भयखंडन ।
जयति चंड औ मुंड जयति धूम्राक्ष विहंडन ।।
जयजयति रक्त औ बिन्दुजो शुम्भ निशुम्भसमरे भननि ।
सुरसंकट हरण अनन्य भनि जयति जयति समरथ जननि

विजय अपरी छंद

जयति जयति प्रमुद्दित सकल सुर ।
जननि पई कृत्त विनय उमगिवर ।।
सहित प्रेम अतिवारि नयन पुर ।
करत चारु अस्तुति अंजुलि जुर ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्चन्तरे देवीमाहात्म्ये शुंभवधो नाम दशमोऽध्याय: ।।१० ।।

दोहा

नमो नमो श्री भगवती, अद्भुत चरित अनूप ।
सुर उबारि गंजे असुर, धरिबहु दिव्य स्वरूप ।।

बिजया छंद

दिव्यमाणिक्यकोक्रीट माथे लसै ।
दिव्यआभर्ण आभाति भारायनी ।।
दिव्यश्वेतांबरं सुन्दरं राजितं ।
छाजितंदिव्यहीरानिहारायनी ।।
दिव्यआवार्द्धश्रीदिव्यसिंहासनी ।
शुम्भनि:शुम्भसंहारकारायनी ।।
दिव्य औतार संसारभैतारनी ।
सोनमोहोनमो मातु नारायनी ।।
शंख चक्रासिश रंग शूल प्रभा ।
दक्षिनी दीक्षसोप्राणधारायनी ।।

चापपाशांकुशं ढाल घंटा तथा ।
बामहाथे महा शोभकारायनी ।।
पुंजिदशसहसभयभूरिभुजभंजनी ।
रंजनीदेवतादैत्यदारायनी ।।
अम्बिकारूपश्रीशंभुशक्तीस्वयं ।
सोनमोहोनमोमातुनारायनी ।।
गात राते प्रभा पाट राते धरे ।
सर्व राते नगाभर्ण धारायनी ।।
दंडका मंडलं मुंडितं पाणिमें ।
चारि बक्रं श्रुतिं चारिचारायनी ।।
राजसी राजहंसेसपै आसना ।
बासनीदादकी दास पारायनी ।।
ब्रह्मणी रूपब्रह्मादि कर्त्ता स्वयं ।
सोनमोहो नमोमातुनारायनी ।।
शंखचक्रंगदापद्म सारंगिनी ।
साबला निर्मला भेष धारायनी ।।
चारि बाहैं धरे बैजयंती गरे ।
बस्त्रपीताम्बरं दास तारायनी ।।
शक्तिशक्तीश श्रीगरुडसिंहासनी ।
सुरमधुःकैटभैदुष्टदारायनी ।।
वैष्णवीरूपविश्वादिमाता स्वयं ।

सोनमोहोनमोमातुनारायनी ।।
शीश सुन्दर जटा गंगधारा लसै
चंद्रमा भाल त्रैनेत्र तारायनी ।।
सिंहचर्मै धरे मुंडमाला गरे ।
तेजपुंजे प्रभा सर्व हारायनी ।।
शूल डमरूलिये कालकूटै पिये ।
ग़ात बीभूतनंदी हकारायनी ।।
रुद्रनीरूप रुग्रादि योगेश्वरी ।
सोनमोहोनमोमातुनारायनी ।।
सर्व सोनेमनै भूषनी भूषिता ।
वस्त्रनोने सुने नेह जारायनी ।।
पाणि बज्रे धरे मुक्तमाला गरे ।
माधुरीमूर्तिसो आसधारायनी ।।
मात मातंग ऐरावती बाहिनी ।
दासको दाहिनी दैत्य दारायनी ।।
इन्द्रनीरूप इन्द्रादि राजेश्वरी ।
सोनमोहो नमोमातु नारायनी ।।
मोर क्रिटै दिये मोरपीठासनी ।
मोर ग्रीवांतनै सोमकारायनी ।
चक्र शक्ती धरे बर्नमाला गरे ।
वस्त्र पीरेपरे पीर टारायनी ।।

सिद्धसाध्यार्चिताचर्चिता चंदनी
बंदनी विश्वविश्वेश पारायनी ।।
नंददा रूप आनंददा सर्वदा ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
चन्द्रवक्रं तथा अर्द्ध चन्द्रं शिरं ।
चन्द्रवर्नतनं दीप्तिधारायनी ।।
अम्बरं उज्ज्वलं प्रज्ज्वलं दुष्ट्वा ।
आवद्य सावद्य नेह भारायनी ।।
शक्ति कोदंडको मंडकरि दानवा ।
दंड परचण्ड ब्रह्मांड पारायनी ।।
कालिकारूप कौमारिशक्तिप्रभा ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
शीशआकाशलों चरणपाताल ।
उन घोरबक्री महाघोर धारा ।।
रोमपैनेखरे नयनज्वाला भरे ।
भीम भैसासनीशीशकारायनी ।।
शेषकेशीशतेथम्भउच्छारिकै ।
डाढके अग्रपरभूमिधारायनी ।।
बारहीरूपबाराहबरदायका ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
अर्द्ध नर्देहधरिके हरी अर्द्धहै ।

उद्धकेशी सदा क्रुद्ध कारायनी ।।
बंकपंजा बने नयनहूं चटचटे ।
कटकटे दंतभयमंतगारायनी ।।
खंभ उरदारि करि दानवा ।
हिर्ण कश्यपको पेट फारायनी ।।
नारसिंही नृसिंहरूपकरि सो ।
नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
कंटि सुस्मैश्वरी बैठि उट्ठे महा ।
हास अट्टट्ट हंकार कारायनी ।।
मुंड रुंडावली तुंड श्रोन श्रवै ।
बूड़े गज चर्म धारायनी ।।
सुक्खमाखंमहाभैरवीभ्यानुकं
भूतचढभयंकरभेषकारायनी ।।
कालिकारूपह्वैराक्षसंभक्षनी ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
देवताश्रोनतापंक अंकर्चिता ।
चर्चितागात संघात धारायनी ।।
टलकानि चक्रानिशत्रुप्रहारनी ।
अत्रस्वर्ग्गादि दुर्गादिदारा ।।
गर्बतै गर्बती चर्बती दानवा
प्रवनीप्रायका प्रेम कागायनी ।।

चंडिका रूप वंकारहंकारिनी ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
धूमरेसे जटा-जूट छूटे शिरं ।
कर्णमुद्रे तने भस्म धारायनी ।।
तेज भौहैं चढी लालचच्छे प्रभा-
माल भद्राक्ष रुद्राक्ष धारायनी ।।
कट्टिश्रोणंबरं पट्ट हैं गेरुषे ।
खप्परं पाणि श्रोण प्रेय हारायनी ।।
दूतिकारूप संग्राम रंग प्रिये ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
बक्र बिकराल प्रज्वाल ज्वालाननं ।
दैत्यनंसैन संदुष्ट ज़ारायनी ।।
नासिकाश्वास छोड़े हि फौजे उड़ैं ।
मत्तहाथान हाथान झारायनी ।।
फेरि त्रैशूल त्रैशूल छैकारना ।
धारनी जैंबिजै बिश्व पारायनी ।।
भई कालिका कलाकालभैभंजनी
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
एकंत आपु शक्तै अनेक कै ।
शुंभ निशुंभ संहार कारायनी ।।
फेरिके नेकते एकही ह्वै खरी ।

एक ह्वै नेककी बुद्धि पारायनी ।।
तो कथा जो यथा सो तथा को कहै
यों अनन्यैभनै श्रोत भारायनी ।।
अक्षरों अनन्य अद्वैत शक्ती प्रभो ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
आपुही आपु अद्वैत प्रभावती ।
आपुही आपु दूतीय कारायनी ।।
आपुही सर्गुनी निगुनी निभासनी ।
भासिनी आपुहीज्योति जारायनी ।।
आपुही आदि अनादि सर्वादि है ।
सर्ब कारन्न सर्ब प्रेय कारायनी ।।
जक्त बीजंति श्रीजक्तमातास्वयं ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
हस्तहीनंविधिकोटि कर्त्ता सदा ।
चक्षुहीनं हरिं कोटि पारायनी ।।
अन्नहीनंहरे कोटिसंहार करि ।
चर्ण हीनं सोई कोटि चारायनी ।।
बाकहीनं धनं कोटि बाणीधुनी ।
गात हीनं धनं कोटि धारायनी ।।
रूपहीनं तनं कोटि रूपं करी ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।

रूप रेखै नहीं रूप रेमै मही ।
रूपरेखै सुकी धीव धारायनी ।।
दृष्टि आवै नहीं दृष्टि आवै तुही ।
दृष्टि आदृष्टि त्रैलोक पारायनी ।।
नित्यनिर्वर्ति परवर्ति कारायनी ।
निर्गुनी सर्गुनीभेष धारायनी ।।
अक्षरो अनन्य अद्वैत शक्तिप्रभो ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
सर्व रूपीनि में रूपगंगा तुही ।
सर्व ज्ञानी नमो ज्ञान धारायनी ।।
सर्वज्योतीनमोज्योतिआभातुही ।
सर्वशक्तीनमोशक्ति कारायनी ।।
सर्व संसारमें सारभूतिक तुही ।
अक्षरों अनन्यसो सर्व कारायनी ।।
सर्वव्यापीचितं नित्तही सर्वदा ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
सर्वदास्तेचितं नित्तहीं सर्वदा ।
सर्वदानंद यं देवदारायनी ।।
सर्वसिद्धिनमें ऐश्वर्यदा सर्वदा ।
सर्वदा सर्व उद्योत कारायनी ।।
सर्वदा सोप्रकाशं प्रभा वंदिता ।

वेदवेदांत सिद्धांत सारायनी ।।
सर्वकर्त्तरी श्रीसर्वशक्ती स्वयं ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।
सर्व सो पाणि पादानि प्रभासबै ।
सर्व तो चक्षुकर्त्तादि कारायनी ।।
सर्वतो गर्भ संसार गर्भै धरै ।
सर्व सो दृष्टि सो पृष्टि धारायनी ।।
सर्वतोनन्तआद्यन्त मध्यंबिना ।
पूरणा सर्वतो पार पारायनी ।।
सर्व विश्वेश्वरी विश्वरूपै धरे ।
सो नमो हो नमो मातु नारायनी ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ।। ११ ।।

दोहा

विश्वरूप विश्वेश्वरी, विश्व जननि परबान ।
सकल विश्व कारन करन, तेरी शक्ति निदान ।।

रेखता

तेरिये शक्ति उत्पत्तिसंसारसब
तेरिये शक्तिप्रतिपालिगाता ।।
तेरिये शक्तिविस्तार इस्थितदुनी
तेरिये शक्ति संहार घाता ।।

तेरियै शक्ति फल दंड पावैं सबै
तेरियै शक्तिक्रतुकर्मधाता ।।
तेरियैशक्तिशिवशक्तिआनन्यभनि
जयतिशिवशक्तिश्रीजक्तमाता ।।
तेरियैशक्तिभुवधरेचर अचरसब
तेरियै शक्तिजलसिन्धुसाता ।।
तेरियै शक्तिजगतेजव्यापी कहै
तेरियै शक्ति जगबहतिबाता ।।
तेरियै शक्तिआकाशध्वनिशब्द है
तेरियै शक्तिसबतत्त्वधाता ।।
तेरियै शक्तिशिवशक्ति आनन्यभनि
जयति शिवशक्ति श्रीजक्तमाता ।।
तेरियै शक्ति निर्गुण्ण निर्वाणपद
तेरियै शक्ति सर्गुन्न गाता ।।
तेरियै शक्तिविधिविष्णु ऐश्वर्यपद
तेरियै शक्तिमाहेश धाता ।।
तेरियै शक्ति रविचन्द्र उद्योतकर
तेरियै शक्तिजल मेघपाता ।।
तेरियै शक्तिशिवशक्ति आनन्यभनि
जयति शिवशक्ति श्रीजक्तमाता ।।
तेरियै शक्ति सुरअमरअमरावती

तेरिये शक्ति मुनिज्ञानज्ञाता ।।
तेरिये शक्ति दैयंत बरजोरअति
तेरिये शक्ति गनरंग गाता ।।
तेरिये शक्ति सबसिद्धिसिद्धांतपद
तेरिये शक्ति अठसिद्धिदाता ।।
तेरिये शक्तिशिवशक्तिआनन्यभनि
जयति शिव शक्ति श्रीजत्तमाता ।।
तेरिये शक्तिते जीवमें तेज है
तेरिये शक्ति दल बलिन गाता ।।
तेरिये शक्ति ज्ञानीनमें ज्ञान है
तेरिये शक्ति ध्यानीन ध्याता ।।
तेरिये शक्तियोगीनमें योग है
तेरिये शक्ति तपतेज जाता ।।
तेरिये शक्तिशिवशक्ति आनन्यभनि
जयति शिवशक्ति श्रीजत्तमाता ।।
तेरिये शक्ति चैतन्यसंसारसब
तेरिये शक्ति जड़ सूत गाता ।।
तेरिये शक्ति महितेज बंधनभवै
तेरिये शक्ति भूत प्रेत भै पावहीं
तेरिये शक्ति निजुभक्ति जाता ।।
तेरिये शक्ति शिव शक्ति आनन्यभनि
जयति शिव शक्ति श्रीजत्तमाता ।।

छप्पय

जक्तमातु जग ज्योति जक्त मूरति जगबंदनि ।
शिव निवास शिव शक्ति शिवहि शिवदा शिव चंदनि ।।
निर्विकार निरधार नित्य निर्वान निरंजनि ।
भव आधार भवसार प्रभै करता भय भंजनि ।।
सर्वानि सर्व लायक सकल सर्व लोक कारण करण ।
समरथ जननि अनन्य भनि जयति मातु अशरणशरण ।।

दोहा

इमि देवन अस्तुति करी, पूरण प्रेम प्रमान ।
ह्वै प्रसन्न भनि ईश्वरी, मांगहु सुर बरदान ।।

गीतिका छंद

सुनि सुरन फूलि प्रणाम करि कीन्ही अरज कर जोरि
तुव कृपाते हम देवपद लहि सुख विभुक्ति न थोरि ।।
ताते सो यह वरदान मांगत सुनु जननि जग माय ।
जब जब सुइमि संकट परै तबतब सो होहु सहाय ।।

सोरठा

सुनि सुर विनय सपीर, श्रीभवानि भय-भंजनी ।
मधुर वचन गंभीर, कहा आपु परमेश्वरी ।।

पद्धरी छंद

संकट काटौं तुम्हरे समस्त । जब जब बाढ़ैं दैयत प्रमस्त ।।
अट्ठाइस्सै कलियुग सुठोर । ह्वै हैं नृप शुम्भ निशुम्भ और ।

तबहींकात्यायनिरूपधारि । हनिहौंसो दुष्ट शत्रुनिसंहारि ।।
पुनि भौमासुर ह्वैहै प्रचंड । युगजीति राजराजहि ब्रह्मंड ।।
तब ह्वै शताक्षिअवतारधारि । हनिहौंसोदुष्टखड्गनिप्रहारि ।
पुनि भीमनाम ह्वैहै दयंत । सो सकललोक फिरिहै दयंत ।
तवह्वैभीमा अवतार धारि । हानिहौंसो दुष्टवृक्षनि उपारि ।।
पुन्दुिर्ग नामदैयंतहोय । त्रैलोकविजय जय सफल सोय
तब दुर्ग्गा अवतार धारि । हनिहौं सो दुष्ट पर्बत प्रहारि ।।
पुनिरासनाम दैयंतराज । विष्ण्वादि विश्व जीतै समाज ।।
तब रक्तदंतिका रूप धारि । हनिहौंसोदुष्टनख दंत फारि ।।
पुनि दारुनाम ह्वैहै सुघोर । त्रैलोक छीनिलेहै प्रजोर ।।
तबह्वै सुभ्राम रूपधारि । हनिहौंसोदुष्टह्विरदय बिदारि ।।
पुनिपरहिकालकृषिआपुजोरउपजहिनअन्न अतित्रासघोर ।
तबह्वैशाकंभरि रूप आइ । रचिशाक सबहि लेहौं जिवाइ ।
अरु शाकनाम हनिहौं दयंत । ताते शाकंभरि नाम ह्वंत ।
इमिजबजब संकटपरहिजक्त । तबतबरक्षहुंहोअभयभक्त ।।
नहिंइसमें कछुसंदेह लाव । यहसुनतभयासबसुक्खचाव ।।

मुरलि छंद

यों कहि दै जग अभय जननि जगबंदिनि ।
ह्वै गत अंतर्द्धान परम सुखकंदिनि ।
फूलि गये सुर पूरि सबन सुख राजियो ।
परि हां घर घर मंगल चार बधाये बाजियो ।

दोहा

यहि विधि सुरथ समाधि सुनि, श्रीभवानिगुणगाथ ।
मुक्ति भुक्ति फल दंड जग, है सब जिनके हाथ ।।
श्री भवानिकी भक्तिते, मुक्ति भुक्ति उद्योत ।
भगवति भक्ति विहीन नर, उभय दृष्टिते होत ।।
ताते भगवति भक्ति निज, करहु राज मन लाय ।
मनबांछित फल पाय हौ, सब लायक जग माय ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
देवीवाक्यं नाम द्वादशोऽध्यायः ।।१२ ।।

सोरठा

यहसुनि सुरथसमाधि, फूलि पाय गहि बिनय किय ।
किमि जग जननि अराधि; मान मंत्र कहिये गुरू ।।

ऋषिरुवाच-मोतीदाम छंद

सुनौ नृप उत्तम मंत्र सुजान ।
फलैजेहिते मनसा सब काम ।।
श्रीभवानिभवानिकोनामउचार ।
सो आगम वेद पुराणको सार ।।
श्रीभवानिकेनामतेऔरनमंत्र ।
श्रीभवानिकेनामतेऔरनयंत्र ।।
श्रीभवानिकेनामतेऔरन ध्यान ।
श्रीभवानिकेनामतेऔरनज्ञान ।।

श्रीभवानिकेनामतेऔरनदेव ।
श्रीभवानिकेनामतेऔरनभेव ।।
श्रीभवानिकेनामतेऔरनजापु ।
श्रीभवानिकेनामतेऔरनछापु ।।
श्रीभवानिकेनामसजीवनमूरि ।
हरैं भयरोग करैं दुखदूरि ।।
श्रीभवानिकोनामफलैफलचारि ।
सोभक्तिचिंतामणिइष्टविचारि ।।
श्रीभवानिकोनामहैपूरणजाप ।
भजैंविधिविष्णुसदाशिवआप ।।
यहैहिरदय धरिकै नृपराय ।
श्रीभवानिभवानिरहौलवलाय ।।
श्रीभवानि जपेसबह्वैहैकाज ।
श्रीभवानिभवानिजपौतुमराज ।।
श्रीभवानिजपे दुख ह्वैहै दूरि ।
श्रीभवानिकोजानोराजपरिपूरि ।।

दोहा

यह सिख सुनि सुख पाँइपरि, उठके सुरथ समाधि ।
नदीतीर इस्थित भये, श्रीभवानि ब्रतसाधि ।।

छप्पय

नदीतीर बिबिबीर थापि मृन्मय श्रीमूरति ।

पूजि रुचिर फलफूल चित्तधरि सुन्दरि सूरति ।।
यकटक दृष्टिलगाइ इष्टचरणन चित चरचत ।
श्रीभवानि नामानि जपत नितप्रति हित सरसत ।।
नहिं भूख न प्यास न त्रास भै सिंहबाघ गुंजतनिकट ।
इमितीनबर्षव्रतदेखिकै सुह्वै प्रसन्न अम्बा प्रगट ।।

दोहा

प्रगट कही परमेश्वरी, मांगु नृपति वरदान ।
सुनि पायँ परोनृप प्रेमसों, किय बिनती परिवान ।।

राजोवाच-दोधक छंद

देहुअभैबरभोभयभंजनि । मोरणजीतिकरौं रणगंजनि ।
मारि सबै शत्रुनकहँ जीतहुं । राज लहौं परिवारहि भेटहुं ।।

ईश्वर्य्युवाच

राजलहो नृप शत्रुन जीतौ । जाय मिलौ अपने कुलहीतौ ।
अंत मन्वन्तर को पदपावो । सूर्य्यवंश सावर्णि कहावो ।।

मोटक छंद

इतनी सुनि भूपति पायँ परो । मनते अधिकैवरकाजसरो ।
पुनिबानियसोंजगमातुकही । बरमांगु समाधिसोदेहुंसही ।।

छप्पय

सुनि समाधि किय विनय सुनहु जननी जगबंदनि ।।
जग असार भ्रम सकल कहा मांगहुं सुर चन्दनि ।।
देहु मोहिं विज्ञान मोह माया भ्रम छुट्टहि ।।

जन्म मरण दुख मिटै कर्म बंधन भय टुट्टहि ।।
निज प्रेम भक्ति आनन्दमें रहौं सदा तुम्हरे शरण ।।
उरमें भ्रम उपजै नहीं सुसेवों दिन दिन तव चरण ।।

ईश्वर्य्युवाच-सोरठा

होहि तोहिं विज्ञान, मोह भर्म माया कटै ।।
बसै हृदय मम ध्यान, जीवन मुक्ति समाधि तुव ।।

दोधक छंद

यों कहिकै जनसों यह वानी । अंतर्द्धान भई महरानी ।।
सिद्धभयोसुसमाधिप्रबीना । ज्ञान बढ़्योमन ध्यानहिंलीना
राउ गयो अपने घरकाजा । शत्रुन जीति भये महराजा ।।
देश प्रसिद्ध करी यह वानी । पूजि सबै जग आदि भवानी ।

दोहा

यहि विधि सुरथ समाधि कहँ, बर दीन्हों जगमाय ।
राई ते पर्बत करयो, रह्यो जगत यश छाय ।।
जगत जीव जल थल सकल, एकहिते सब थापि ।
श्री भवानिकी भक्ति जे, भयो सो बढ़्यो प्रतापि ।।

दंडक छंद

ब्रह्म विष्णु रुद्र इंद्र चंद्रादिक देव देह,
कीटहू पतंग भंग अंग इति थापु है ।
सबके शरीर एक माइही समान जानि,

सबहीमें आतमा समान पुनि आपु है ।।
देखिये प्रत्यक्ष भिन्नकरणी अनन्य भनै,
एकै शिरमौर एक कोटपद चापु है ।
जसी जहांभक्ति तैसी तहां शक्ति विधि वान,
यहै श्रीभवानिजीकी भक्तिको प्रताप है ।।

दोहा

सुरनर मुनि गंधर्व गण, याचक सबै बखानि ।
तिहूं लोक तिहुंकालमें, दाता एक भवानि ।।

मदन मनोहर छंद

दई शक्ति ब्रह्मै भये विश्वकर्ता
दईशक्ति विष्णुहिप्रजापालिजानी ।
दई शक्ति शेषै भये भूमिधर्ता
दई शक्ति रुद्रै प्रलैघात घानी ।।
दईशक्तिचंद्रैछपाज्यो तिछाई
दईशक्तिभानैप्रकाशैभवानी ।
अनन्यै भनै देवताशक्तियांचै
तिहूँलोकमें एकदाता भवानी ।।
भजैंसिद्धसाधूमुनिन्दा अराधैं
लहैंऋद्धिसिद्धैफरैसिद्धिबानी ।
भजैं राजराजै फुरै शस्त्रविद्या
जुरैयुद्धजीतै विजयराजधानी ।।

भजैभक्तियोगीलहैमुक्ति अंतै
कवित्वै करै जोचहै बाकबानी ।
अनन्यै भनै सर्वदा सर्वपूरी
सबै विश्वमें एकदाता भवानी ।।
भजैशारदाते लहैंबुद्धि विद्या
गणेसैभजैते लहैंसिद्धिबानी ।
भजैविष्णुकोतौलहैमुक्तिअंत
विभवलक्ष्मीकेभजेजत्तजानी ।।
जितेदेवताभैव ताको बिचारैं
कलाजौनज मेंसुहैतासुदानी ।
अनन्यैभनैएकको एकदाता
सदासर्वदा सर्वदाता भवानी ।।
सदासर्वदाता सदासर्वकर्त्ता
सदासर्वरूपककहै बेदबानी ।
नआदैनअंता कहावै अनंता ।
नियंतासबैलोककीलोकरानी ।।
हरीशम्भुब्रह्मा करैं भक्तिजाकी
धरैं ध्यानयोगीतपीसिद्धि ज्ञानी ।
अनन्यै भनै जोरहै गुप्तरूपा ।
कहै ज्योति जासों वहै है भवानी ।।

दोहा

गुप्त वहै प्रगटै वहै, निकट वहै औ दूरि ।
श्रीभवानि त्रिभुवनविषे, रही सबन भरि पूरि ।।
जो जेहि भांति भजे जहां, ताको तहाँ प्रतक्ष ।
त्रिभुवन व्यापक शक्तिनिज, श्रीभवानिशुभलक्ष ।।
श्रीभवानि शुभ लक्षनी, परमसुन्दरी जानि ।
ताको दुर्ग्गापाठ यह, अक्षर अनन्य बखानि ।।
जो यहि दुर्ग्गापाठको, पाठ करै मन लाय ।
मनवांछित फल देहि तेहि, श्रीभवानि जगमाय ।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे
देवीमाहात्म्ये सुरथवैश्यवरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्याय: ।।१३ ।।

इति दुर्गापाठ भाषा समाप्त

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

